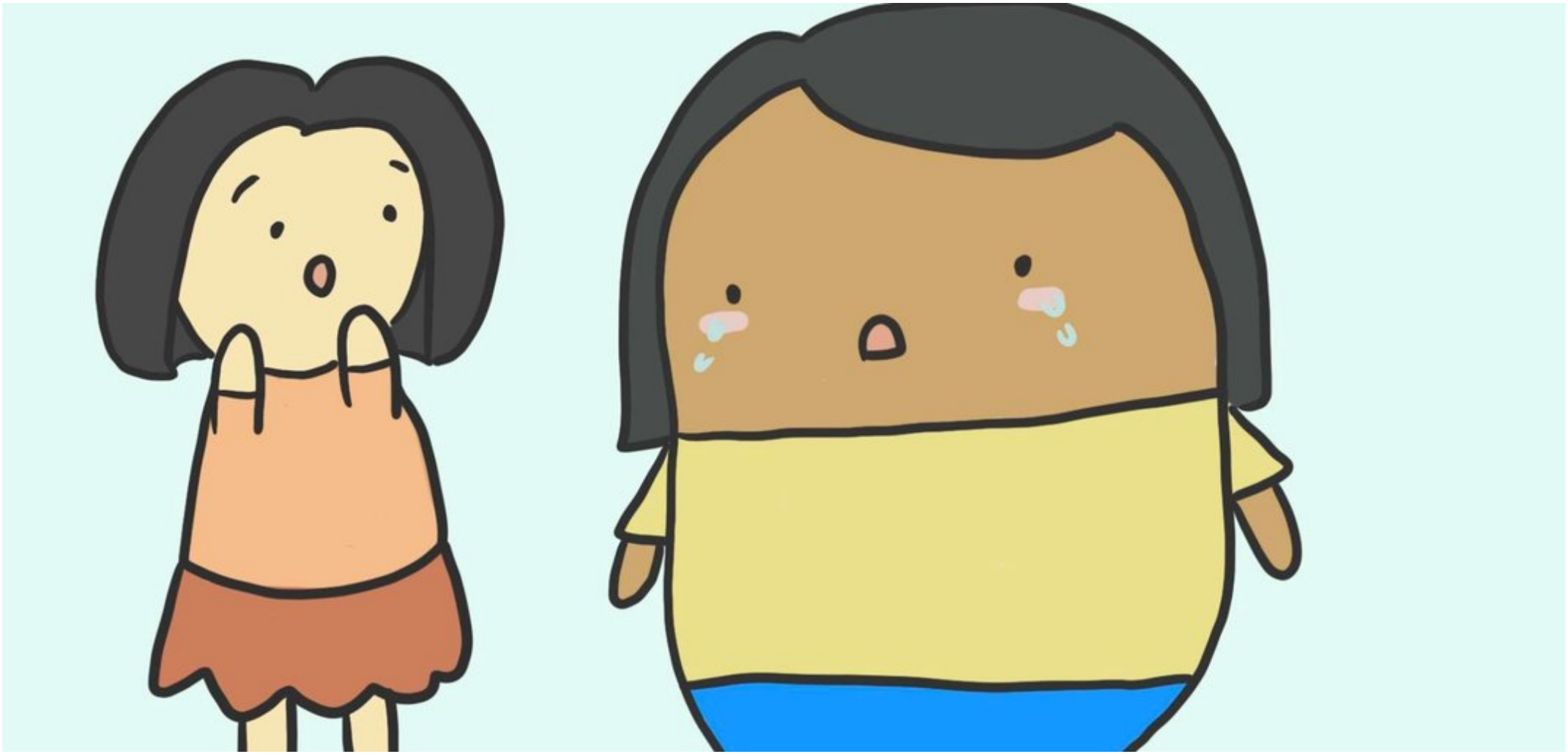

चालाक आलू

Author: sangita vegad
Illustrators: Angie & Upesh, Narayan Prasad Bohaju, Nguyễn Minh Hải, Niloufer Wadia, Ruchi Mittal, Trinh Le

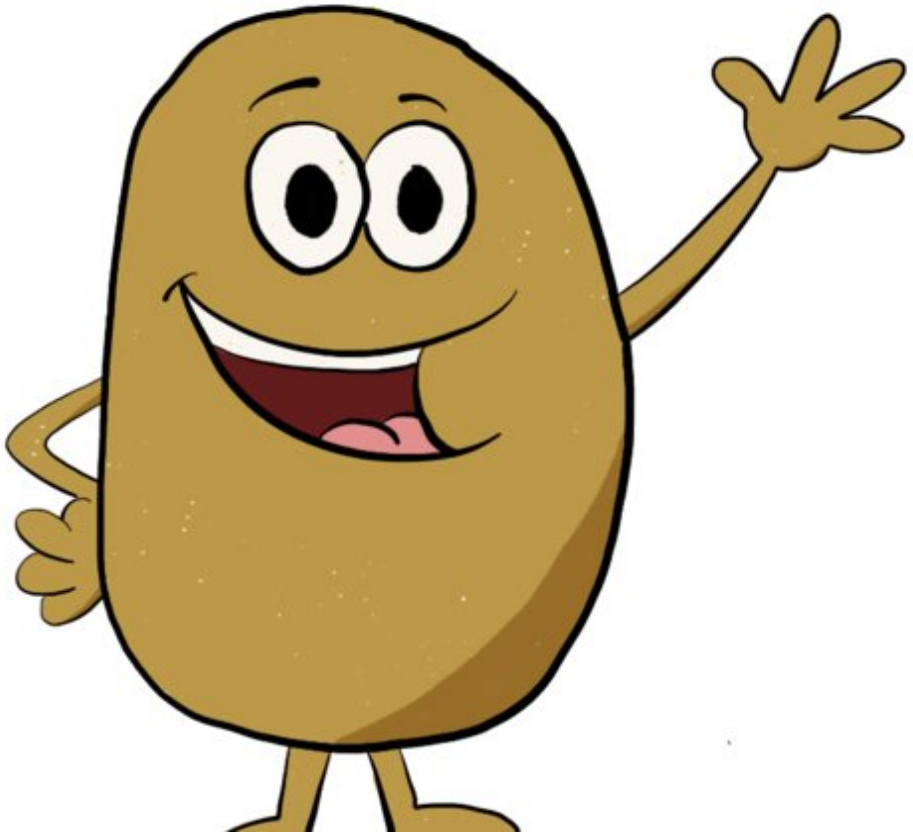

चालाक आलू

रिंकी को सब्जियों से नफरत थी। उसकी माँ पूरी कोशिश करती थी कि वह सब्जियाँ खाए लेकिन वह हर सब्जी को खाने से पूरी तरह इन्कार कर देती थी। उसकी इस आदत से उसकी माँ चिन्तित रहती थी।
एक दिन रिंकी की माँ ने खीरे का हलवा बनाया। बहुत स्वादिष्ट बना था। रिंकी की छोटी बहन नीलू तो पूरा हलवा ही खा जाना चाहती थी।

उसके पिता ने भी उसकी बहुत प्रशंसा की। मगर रिंकी ने तो बस नाक चढ़ा रखी थी। उसकी माँ को बहुत बुरा लगा। मगर खीरे को उससे भी अधिक बुरा लगा। आलू ने उसे एक कोने में उदास बैठे देखा। “अरे, तुम इतने उदास क्यों दिख रहे हो?”, आलू ने पूछा। “रिंकी ने फिर से एक भी मौका दिए बिना मुझे ठुकरा दिया है”, खीरे ने कहा।

“अरे मुझे तो उसने मेज पर से उठाकर फैंक ही दिया था। उस गुस्ताख लड़की को तो सबक सिखाना ही चाहिए”, फूल गोभी बोली। आलू मुस्कुराया और बोला, “मेरे पास एक तरीका है।” अगली सुबह जब रिंकी नाश्ते की मेज पर आई तो दूध का गिलास उसके इन्तजार में था। लेकिन वह हैरत में पड़ गई - मीठा दूध कड़वा लग रहा था।

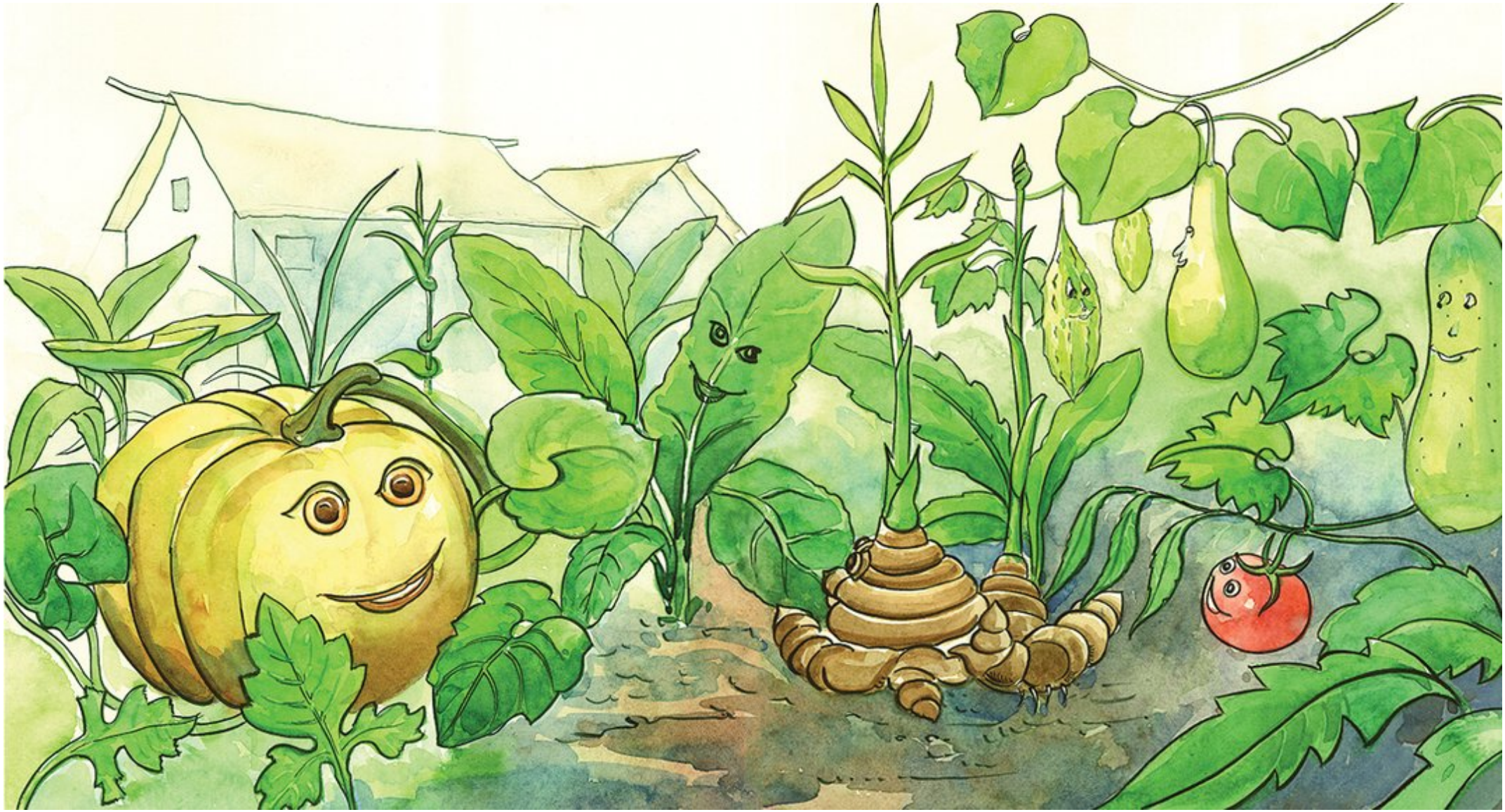

आलू ने कद्दू को अपना थोड़ा सा कड़वा जूस उसमें डालने को कह दिया था। रिंकी का स्कूल जाने का समय हो रहा था और इस लिए अब वह कुछ करने की हालत में नहीं थी। उसने अपना खाने का डिब्बा उठाया और बस की ओर लपकी। दोपहर के भोजन के लिए उसने उत्सुकता से डिब्बा खोला। डोसा। मगर नमक बहुत अधिक था और इसलिए वह खाने लायक नहीं रह गए थे। आलू ने आटे में खूब सारा नमक डाल दिया था।

रिंकी शाम को घर पहुँची तो भूख के मारे बोल भी नहीं पा रही थी। वह सीधे फ्रिज में पड़ी आइसक्रीम तक पहुँची। और क्या पाया कि वह तो खट्टी थी! आलू ने उसमें निंबू जो निचोड़ दिया था। भूख के मारे क्रोध में आई रिंकी को अब फ्रिज में जो भी सामने दिखाई दिया, वही उठा लिया। यह खीरे का हलवा था।

कुछ ही देर बाद वह बोली, “अरे! मैंने पहले क्यों न जाना कि यह इतना स्वादिष्ट होगा!” देखते ही देखते हलवा खत्म हो गया। तब से रिंकी ने सबक सीख लिया। फिर उसने कभी भी कोई सब्जी खाने से इन्कार नहीं किया|

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: चालाक आलू is written by sangita vegad . © sangita vegad , 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: potato, by Trinh Le © Trinh Le, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Potato, by Ruchi Mittal © Ruchi Mittal, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Various vegetables, by Narayan Prasad Bohaju © Room to Read, 2009. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Family eats fried hyacinth with shrimp, by Nguyễn Minh Hải © Room to Read, 2012. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Vegetables and fruits showing off their power, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Pumpkin, spinach, ginger, tomato, by Narayan Prasad Bohaju © Room to Read, 2009. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Girl looking at her own stomach, by Angie & Upesh © Pratham Books, 2008. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: A variety of vegetables, by Narayan Prasad Bohaju © Room to Read, 2009. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

चालाक आलू

(Hindi)

सब्ज़ी

This is a Level 1 book for children who are eager to begin reading.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!